मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

जून 2012 वर्ष 17, अंक 6

पुण्यतिथि, 30 जून पर विशेष

दादाभाई नौरोजी

दादाभाई नौरोजी पारसी धर्म को मानने वाले एक बुद्धिजीवी और राष्ट्रीय आंदोलन के शुरुआती राजनीतिक एवं सामाजिक नेता थे। उनके जीवन का अधिकांश समय यूनाइटेड किंग्डम में बीता, जहाँ उन्होंने सूती कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े रहकर भारतीयों की दुर्दशा पर ब्रिटेनवासियों का ध्यान खींचने का काम किया। वे ब्रिटिश पार्लियामेंट, हाउस ऑफ कॉमन्स में सन् 1892 से 1895 तक सदस्य भी रहे। सन् 1885 में काँग्रेस की स्थापना में भी उनका योगदान रहा। दादाभाई को जिस विशेष कारण से याद किया जाता है वह यह कि पहली बार उन्होंने ही भारतीयों की आर्थिक दुर्दशा के लिए ब्रिटिश सरकार को दोषी ठहराया था और यह स्थापना दी थी कि भारत का धन ब्रिटेन जाने की वजह से भारत की आर्थिक दशा खराब हो रही है। दादाभाई के संबंध में दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके ही प्रयासों से ब्रिटेन और भारत में एक साथ सिविल सर्विस की परीक्षा होने की बात मानी गई।

दादाभाई पहले एशियाई थे जो ब्रिटेन की संसद के सदस्य चुने गए थे। ब्रिटिश संसद में रहने से पूर्व तथा बाद में, दो बार वे नवगठित भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष भी चुने गए। पहली बार 1886 में एवं दूसरी बार 1906 में। नौरोजी बहुत बड़े उदारवादी नेता माने जाते थे। गोपाल कृष्ण गोखले और मोहनदास करमचंद गाँधी के वे पूर्ववर्ती थे और ये दोनों इनसे प्रेरणा लेते थे।

दादाभाई बंबई और लंदन में शिक्षण पेशा से भी जुड़े थे। बंबई में जहाँ एल्फिंस्टन इंस्टीट्यूट में मात्र 25 वर्ष की उम्र में वे प्रोफेसर नियुक्त हुए थे वहीं लंदन में यूनिवर्सिटी कॉलेज में वे गुजराती के प्रोफेसर थे। गणित और दर्शनशास्त्र भी उन्होंने पढ़ाया। सन् 1854 में उन्होंने पारसी धर्म और समाज में सुधार के लिए पाक्षिक पत्रिका, *रास्त गुफ्तार* का प्रकाशन शुरू किया था। 1901 में उनकी लिखी प्रसिद्ध पुस्तक *पॉवर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया* का प्रकाशन हुआ। दादाभाई 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' के रूप में देश में विख्यात हैं। उनका जन्म 4 सितंबर, 1825 को बंबई में हुआ था तथा निधन 1917 में।

पर्यावरण बनाएँ सुंदर
एक नयापन आ जाए
स्वच्छ हवा और पानी से
बस्ती-बस्ती मुस्काए!
डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा, गिलूंड, राज.

''अगर अपनी मातृभूमि के लिए मुझे एक हजार बार भी मृत्यु का सामना करना पड़े तो मुझे दुख न होगा। हे भगवान! मुझे भारत में एक हजार बार जन्म लेने दो। मगर यह भी वरदान दो कि हर जनम में मैं अपना जीवन माँ भारत की सेवा में न्योछावर कर सकूँ!''

जन्मदिवस, 11 जून

रामप्रसाद बिस्मिल

विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के द्वारा प्रत्येक वर्ष पर्यावरण के प्रति वैश्विक चेतना जगाने हेतु 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह दिवस 1973 में पहली बार मनाया गया था। विश्व के विभिन्न शहरों में इस अवसर पर पर्यावरण संबंधी अनेक कार्यक्रम होते हैं। इस बार पर्यावरण दिवस का थीम 'हरित अर्थशास्त्र' रखा गया है।

बिरसा की कहानी

—महावीर प्रसाद सिंह 'माधव'

बिहार प्रदेश का दक्षिणी भू-भाग झारखंड के नाम से प्रसिद्ध है। अब यह बिहार से अलग एक स्वतंत्र राज्य है। जंगल-झाड़ से भरे रहने के कारण आर्यों ने इस भू-भाग का नाम झारखंड रखा था। प्राचीनकाल से ही यह आदिम जातियों का निवास स्थान रहा है। आज भी यहाँ जंगली जातियों की प्रधानता है। यहाँ संथाल, मुंडा, उराँव, हो, भूमिज, खड़िया, पहाड़िया, खरवार, तुरी, घाँसी, कोड़ा, गोड़ैत, बिरहोर आदि आदिम जातियाँ हैं जिनमें संथाल, मुंडा और उराँव प्रमुख हैं।

इतिहास बताता है कि इस भू-भाग में सबसे पहले मुंडा लोग आए और उत्तरी-पश्चिमी भाग में बस गए। वहीं से फिर वे समूचे झारखंड में फैल गए। कहा जाता है कि पहले-पहल मुंडा लोग मुरिमा नामक गाँव में आकर बसे थे। उनके सरदार का नाम रिशा था।

बहुत दिनों के बाद इसी मुंडा जाति में बिरसा नामक एक प्रसिद्ध आदमी हुए, जिनका नाम इतिहास में मिलता है। बिरसा बड़ा बहादुर था। बहादुर ही नहीं, देश-प्रेमी भी था। उसके देश-प्रेम और बहादुरी के गीत आज भी गाए जाते हैं।

बिरसा मुंडा जाति के थे। मुंडा अनार्य हैं, जो जंगलों और पहाड़ों में रहते हैं। ये लोग आमतौर पर निरक्षर हैं। इनमें शिक्षा का प्रचार नहीं है। ये जंगली जीवन बिताते हैं। शिकार करना, भेड़-बकरी, सूअर, गाय-बैल और भैंस पालना, मेहनत-मजदूरी करना और लकड़ी काटकर बेचना इनका प्रमुख पेशा है। ये कुछ खेती भी करते हैं। मुंडा और संथाल बड़े सच्चे और ईमानदार होते हैं। ये लोग बड़े परिश्रमी, साहसी और कर्मठ होते हैं। इनकी स्त्रियाँ भी मर्दों के बराबर काम करती हैं। वे भी हृष्ट-पुष्ट और बलवान होती हैं। इनके घर टट्टी, लकड़ी और कहीं-कहीं मिट्टी के बने होते हैं। वे अपने घर की सफाई पर पूरा ध्यान देते हैं।

बिरसा का परिवार भी संथालों के साथ जंगली जीवन बिताता था। उनके पिता वृद्ध थे, फिर भी जंगल से लकड़ी काटकर, बाजार में बेचकर अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे। उस समय बिरसा चौदह वर्ष के थे। अब बिरसा भी अपने पिता के साथ जंगल जाते और लकड़ी काटकर बेचते थे।

एक दिन बिरसा को जंगल में रात हो गई। उस दिन वह अकेले थे। जब वह आ रहे थे, रास्ते में एक बाघ ने उनका पीछा किया। बिरसा बाघ को देखकर तनिक भी नहीं घबराए। बाघ गरजा और बिरसा पर टूट पड़ा। बिरसा तैयार थे। उन्होंने अपनी कुल्हाड़ी बाघ पर दे मारा। दोनों में थोड़ी देर तक संघर्ष हुआ। अंत में बाघ मारा गया। बिरसा की जीत हुई।

समय गुजरा। बिरसा जवान हुए। इस बीच कई बड़े-बड़े अदल-बदल हुए। उस समय तक अँगरेजों का राज्य सारे भारत में फैल चुका था। अँगरेजों की प्रभुता जम चुकी थी। वे इतने बलवान और आततायी हो गए थे कि उनके अफसर, अमले और सेना-सिपाही मुंडाओं के ऊपर अत्याचार करने लगे।

अँगरेज पादरी ने ईसाई धर्म का जबरदस्त प्रचार करना शुरू कर दिया था। बहुत-से मुंडा लोगों को ईसाई बना लिया गया था। जगह-जगह ईसाई धर्म के प्रचार के लिए खेमे गाड़े गए। जो लोग इसाई धर्म स्वीकार नहीं करते थे, उन्हें अनेक तरह के कष्ट दिए जाते थे।

मुंडा लोगों ने इसका विरोध किया। उनके लोगों का सरदार बिरसा बने। उन्होंने अँगरेजों के विरुद्ध नारा बुलंद किया। बिरसा ने मुंडों को एकत्र करने के विचार से अपने को अवतार घोषित किया और लोगों से कहा—"भगवान ने मुझे यह संदेश लेकर तुम्हारे पास भेजा है कि तुम लोग अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए उनके खिलाफ विद्रोह करो। तुम्हारा सारा दुःख शीघ्र दूर हो जाएगा।"

आगे उन्होंने कहा—"मुंडा राज्य कायम करने के लिए और अँगरेजों से बदला लेने के लिए तैयार हो जाओ।" मुंडा लोगों ने बिरसा को देवदूत समझकर उनकी भविष्यवाणी को सच मान लिया और अँगरेज के खिलाफ सन् 1895 ई. में लड़ाई छेड़ दी।

आदिवासियों ने डटकर बिरसा का साथ दिया। खुलकर और जमकर लड़ाई हुई। जगह-जगह लूटपाट, मार-काट शुरू हो गई। अँगरेजों की कोठियाँ जला दी गईं। कितने ही अँगरेज भाले, बर्छे, तीर और कुल्हाड़ी के शिकार हुए। बहुत-से अफसर और सेना-सिपाही को भी मार दिया गया।

पर लड़ाई अधिक दिनों तक नहीं चल सकी। बेचारा बिरसा गरीब, निहत्थे आदिवासियों से और क्या उम्मीद करता? उनके भाले-बर्छे, तीर-कमान अँगरेजों की गोली का कब तक सामना करते? अँगरेजों ने गोलियों की बाढ़ से आदिवासियों का नाश कर दिया। उनके घर उजाड़ दिए गए। उनमें आग लगा दी गई। उनको पकड़कर जलती ज्वाला में झोंक दिया गया। इस प्रकार बुरी तरह आंदोलन को दबा दिया गया।

अंत में बिरसा भी पकड़कर कैद कर लिये गए। उन्हें जेल में बंद कर दिया गया। कुछ दिनों के बाद बिरसा की जेल में ही मृत्यु हो गई। बिरसा सचमुच बहुत वीर थे। उन्होंने बड़ी बहादुरी का काम किया। तभी आज भी सब लोग बिरसा की जय मनाते हैं।

विश्व रक्तदान दिवस, 14 जून

रक्तदान करके मनाते हैं जन्मदिन

दिल्ली में एक बड़े अस्पताल में कार्यरत एक डॉक्टर समाज के लिए मिसाल बन गए हैं। डॉ. मकरू अब तक सौ से अधिक बार रक्तदान कर चुके हैं। वे अपनी शादी की सालगिरह एवं बेटियों का जन्मदिन भी रक्तदान कर मनाते हैं।

विदित हो कि रक्तदान करना दानकर्ताओं के स्वयं के स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है। रक्तदान करने से शरीर में कमजोरी आने की बात से मेडिकल साइंस इत्तफाक नहीं रखता। रक्तदान करने के लिए सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से गाहे-बगाहे अपील की जाती है। उल्लेखनीय है कि भारत में हर साल 90 लाख से 1 करोड़ यूनिट खून की जरूरत होती है, लेकिन जमा हो पाता है मात्र 70 लाख यूनिट। देश की एक प्रतिशत आबादी भी यदि रक्तदान करे तो वह खून की बुनियादी जरूरतों के लिए पर्याप्त होगा। डॉक्टर कहते हैं कि रक्तदान करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और नया खून दो दिन में ही बन जाता है।

संत कबीर दास जयंती, 15 जून

कबीरदास : निर्गुण भक्ति के संत कवि

ऐसी बाणी बोलिये मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कूँ सुख होइ॥

कबीर

निर्गुण भक्ति धारा के कवि संत कबीरदास एक महान समाज सुधारक थे, जिन्होंने कुरीतियों एवं आडंबरों का जोरदार विरोध किया तथा समाज को एक नई दिशा दी। संत कबीरदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना की और भक्ति रस की अमृत धारा प्रवाहित की। उनकी वाणी जगत की अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर है।

आइए, कबीरदास जयंती के अवसर पर उनके विचारों एवं आदर्शों पर चलने का प्रण लें!

लघुकथा

शिक्षा यज्ञ आहुति

दिलीप भाटिया, *रावतभाटा, कोटा, राजस्थान*

"अंकल, मेरे पास बस 10 रुपये हैं। मेरी नानी ने पास होने का इनाम दिया है। आप इन रुपयों से कुछ ऐसी अच्छी नई पुस्तकें दे दीजिए जो बड़ी उम्र के निरक्षर लोगों को अक्षर ज्ञान सीखने में मदद करें।"

"बेटी, तुम इन पुस्तकों का क्या करोगी?"

"जी अंकल, मैं दादी के गाँव जा रही हूँ। इंदौर वाली ट्रेन मुझे पकड़नी है। हमारे गाँव के स्कूल के टीचर शाम को प्रौढ़ शिक्षा अभियान में गाँव के निरक्षर अंकल-आँटी को लिखना-पढ़ना सिखाते हैं। नानी के दिए रुपयों का सदुपयोग मैं इस शिक्षा यज्ञ में करना चाहती हूँ।"

"शाबास बेटी! मैं अभी तुम्हें पुस्तकें निकालकर देता हूँ।"

"थैंक्यू, अंकल जी!"

गाँव-गाँव से उठी पुकार
साक्षरता अपना अधिकार।

रचना सिद्धा, जयपुर, राजस्थान

पर्यावरण चेतना पर काव्य अभिव्यक्ति

आया गर्मी का मौसम

राधेलाल 'नवचक्र'

आया गर्मी का मौसम
चलो पेड़ की छाँह तले।
कथा-कहानी की किताब
लेते अपने साथ चलें।
कोई एक पढ़ेगा जब
बाकी सब कथा सुनेंगे।
सीखेंगे अच्छी बातें
दुनियादारी जानेंगे।
अक्षर-शब्द की ताकत को
हम भी अब पहचानेंगे।
निरक्षर के मन में हम सब
अक्षर-दीप जलाएँगे।
बागों की रखवाली भी
इनके साथ हम करेंगे।
इक पंथ दो काज ऐसे
करके हम आगे बढ़ेंगे।
घर-घर ज्ञान-दीप जले तो
अज्ञान का तम भागेगा।
देश-समाज का नाम भी
इसी तरह ऊँचा होगा।

भागलपुर, बिहार

धरती हमारी एक है

अज़ीज़ जौहरी

भारत का नाम और बढ़ाना है ज़रूरी
धरती को कुछ और सजाना है ज़रूरी
धरती हमारी एक है कोई कहीं रहे
धरती की तरह एक ही रहना है ज़रूरी
बगिया हरी-भरी रहे हम सब की ऐ अज़ीज़
घर-घर में दो ही फूल खिलाना है ज़रूरी
गीता है वेद बाइबिल कुरआन की तरह
हर आदमी को एक समझना है ज़रूरी
कोई किसी पे जुल्म करे, न करे सितम
जुल्मो-सितम यहाँ से मिटाना है ज़रूरी
आबादी बढ़ रही है यहाँ आग की तरह
इस आग को अज़ीज़ बुझाना है ज़रूरी
आओ कदम मिला के चलें ऐ मेरे अज़ीज़
दुनिया को ये मिसाल दिखाना है ज़रूरी।

इलाहाबाद, उ.प्र.

उपकारी पेड़

रुद्रपाल गुप्त 'सरस'

पेड़ बड़े गुणकारी हैं
सदा-सदा उपकारी हैं
इनसे जोड़ो नाता भाई
यह तो स्वास्थ्य प्रभारी हैं
नहीं चलाओ इन पर आरी
उलटा काम, मत बनो मुरारी
अरे! प्रकृति के यह वरदान
इनसे शोभित वसुधा सारी
फल सुंदर-से पुष्प सुहाने
पात-छाल-जड़ औषधि जानें
इसीलिए हम भारतवासी
जीवनदाता इनको मानें।

संडीला, हरदोई, उ.प्र.

पेड़

मीना गुप्ता

कितने अच्छे लगते पेड़
खड़े-खड़े न थकते पेड़
बादल पास बुलाते पेड़
हरियाली फैलाते पेड़
अपना फल न खाते पेड़
परोपकार सिखलाते पेड़
शरण पथिक को देते पेड़
खुशहाली हैं लाते पेड़
पत्थर भी जब खाते पेड़
बदले में फल देते पेड़
सेवा से मिलती है मेवा
सबक यही सिखलाते पेड़।

आगरा, उ.प्र.

ने.बु. ट्रस्ट से प्रकाशित नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत महिला सशक्तीकरण विषयक कुछ पुस्तकें

आ गई दूसरी सिमरन
प्रेम गोरखी; अनु. : फूलचंद मानव
पृ. 18 ` 15.00
शिक्षा का महत्व समझाती एक रोचक पुस्तक।

औरत जात
एस. साकी; अनु. : मोना साकी
पृ. 20 ` 9.00
स्त्री के चरित्र पर केंद्रित पंजाबी कथाकार की एक श्रेष्ठ रचना।

इस हाथ दे, उस हाथ ले; *आभा झा;* पृ. 16 ` 9.00
आज के जमाने में सबको बेटा चाहिए। पुस्तक बताती है बेटी भी परिवार के लिए बेहद जरूरी है। लाजो ने एक शर्त रख छोड़ी थी। वह शर्त क्या थी? जानने के लिए पुस्तक पढ़ें।

उजाले की राह
मो. साजिद खान; पृ. 12 ` 6.00
कोई काम छोटा नहीं होता। हिम्मत कभी नहीं हारनी चाहिए। अहमद को जीने का मंत्र मिल गया, उसने काम शुरू कर दिया।

एक औरत एक जिंदगी
रामदरश मिश्र; पृ. 20 ` 8.00
अकेली औरत पति की मृत्यु के बाद समाज से संघर्ष करती हुई अपना स्थान बनाती है। हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकार की एक सशक्त कथा।

एक थी सुल्ताना; *नासिरा शर्मा;* पृ. 24 ` 10.00
मुस्लिम लड़की भी तलाक ले सकती है। समाज में दोनों को बराबर का अधिकार है। कल्लू मियाँ की लड़की सुल्ताना ने भी अधिकार को समझा और दूसरी शादी के लिए हामी भर दी।

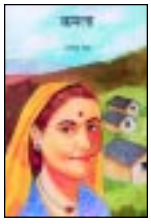

कमला
अरविन्द मिश्र; पृ. 16 ` 9.00
कमला ने गाँव की महिलाओं को एकत्र कर साक्षरता केंद्र की शुरुआत की। महिलाओं की एकता ने अपने मंडल को कैसे अपने प्रदेश में सर्वश्रेष्ठ बना दिया, पढ़िए।

किरन; *राजेश शुक्ला;* पृ. 14 ` 9.00
यह कहानी एक ऐसी संवेदनशील किशोरी की है जो प्रकृति को प्रेम करने वाली है। प्रकृति के प्रति उसकी संवेदनशीलता को देखकर मैडम गाँव के लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करती हैं।

नया सवेरा
योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण'; पृ. 24 ` 13.00
ज्यादा बड़ा परिवार हो तो अलग तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। छोटे परिवार का संदेश जब डॉक्टरनी ने दिया तो दादी भी मान गई।

बड़ी हो रही है लड़की
रघुवीर सहाय; पृ. 16 ` 7.00
लड़की किन परिस्थितियों में कैसे और किस तरह अपना विकास करती है। ऐसे ही सतरंगी रंगों को इस किताब में समेटा गया है।

भानसोज की चैती
गिरीश पंकज
पृ. 16 ` 5.00
गाँव में शराबबंदी के लिए महिलाओं द्वारा एकत्र होकर किए गए संघर्ष की कहानी।

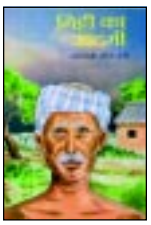

मिट्टी का आदमी; *वासिरेड्डी सीता देवी*
अनु. : जे. एल. रेड्डी; पृ. 32 ` 10.00
अपनी गलतियों के कारण वरूथिनी ने अपना घर, परिवार, धन-दौलत, मान-मर्यादा को कैसे खो दिया? यही बताती है तेलुगु से हिंदी में अनूदित यह रचना।

रामो चंडी
चंदन नेगी; अनु. : सुभाष नीरव; पृ. 18 ` 12.00
पंजाबी लेखिका की एक मार्मिक रचना। एक ही मुहल्ले में एक ही नाम की पाँच औरतें रहती हैं। ऐसे में रामो चंडी को जानना बेहद जरूरी हो जाता है।

सच्ची खुशी
अमर गोस्वामी; पृ. 12 ` 8.00
दामोदर पांडे ने अपनी समाज सेवा के साथ अपनी माँ के छुआछूत के भेदभाव को बिल्कुल मिटा दिया। वरिष्ठ कथाकार की एक आदर्श रचना।

सुजाता की सास; *शिव मृदुल;* पृ. 12 ` 8.00
सुजाता की सास लड़के और लड़की में कोई भेद नहीं रखती है। सास के इस उदारवादी और ममतामयी व्यवहार से सुजाता की सास के प्रति पूर्व में बनाई गई गलत धारणाएं टूट गईं।

साँवरी; *अनीता चौधरी;* पृ. 16 ` 13.00
गौरी और साँवरी जमींदार की दो बेटियाँ हैं जो अपने नाम के अनुरूप ही गोरी और साँवली है। साँवरी अच्छी शक्ल-सूरत की न होकर भी दिल से अच्छी थी। उसने गौरी सहित पूरे परिवार का हृदय परिवर्तन कर दिया।

गाँव-गाँव में अलख जगाएँ
आओ मेरे साथ
निरक्षर को अक्षर-ज्ञान कराएँ
आओ मेरे साथ!
सुरेश 'आनंद', रतलाम, म.प्र.

हमेशा सभी मुस्कराते रहो
शिक्षा की अलख जगाते रहो
घर-घर में क ख ग का प्रसार करो
कोई न रहे अनपढ़ सबको पढ़ाते रहो।
भोमाराम बैरवा, बसवा, दौसा, राजस्थान

जो पढ़ते आगे बढ़ते हैं
अनपढ़ पीछे रह जाते हैं
शिक्षा जीवन को दिशा दिखाती
जीवन जीना यह सिखलाती।
रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

पढ़ पुस्तक संस्कार जागते
स्वाभिमान जीता है
बिन पुस्तक अतीत धुँधला-सा
वर्तमान रीता है।
सुकीर्ति भटनागर, पटियाला, पंजाब

किताबें जीती-जागती सभ्यताएँ हैं। इन्हें पढ़ें, गुनें और अपनाएँ।

पाठकीय प्रतिक्रिया

- **मई 2012 : सा. सं.** ज्ञान गंगाजल है। इसका ज्ञान एक बड़ी किताब से ऊपर है। आप विश्वबंधुत्व, आपसी भाईचारा के विकास के लिए पूरी मेहनत से सेवा कार्य कर रहे हैं। कई वर्षों से शिक्षा की वर्षा तो करते ही आ रहे हैं। प्रस्तुत अंक में महापुरुषों पर जानकारी उपयोगी थीं। **शंकर देव भिमानी,** जनकपुरी, नई दिल्ली
- **सा. सं.** के हर अंक में आपका श्रम एवं कौशल दर्शनीय होता है। इसके किसी भी अंक की सबसे बड़ी विशेषता होती है महापुरुषों के जीवन वृत्त की संक्षिप्त जानकारी, जो इस अंक में भी है। एक सुधार निवेदित है : फ्लोरेंस नाइटिंगेल इटैलियन परिवार में पैदा हुई थीं, ब्रिटिश परिवार में नहीं। **ओम प्रकाश मंजुल,** बरेली, उ.प्र.
- ऐसी प्रेरणाप्रद पत्रिका कलेवर में छोटी होते हुए भी अपने गंभीर ज्ञान के प्रभाव से किसी भी बड़े ग्रंथ से कम नहीं आँकी जा सकती। **शंभु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल',** गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड
- **अप्रैल 2012 :** विश्व पुस्तक व कॉपीराइट दिवस पर अच्छी सामग्री पढ़ने को मिली। प्रायः सभी रचनाएँ पुस्तकों पर केंद्रित थीं। अंक अच्छा लगा। **गोपीनाथ कालभोर,** खंडवा, म.प्र.
- **सा. सं.** नियमित मिल रहा है। प्रत्येक अंक ज्ञान का आगार है। हर अंक लाभान्वित करता है। **नवल जायसवाल,** भोपाल, म.प्र.
- हर रचनाकार की सृजनधर्मिता अर्थपूर्ण है। मेरी अभिव्यक्ति भी इस अभियान का माध्यम बनती है, कृतज्ञ हूँ। **अंजना अनिल,** राज.
- आपके कुशल संपादन में पत्रिका का रूप और निखरकर सामने आया है। इसे देखकर ऐसा लगने लगा है कि नवसाक्षरों की एक साहित्यिक पत्रिका हाथ में आ गई हो। जिन लोगों ने नया-नया पढ़ना-लिखना सीखा है उनके लिए यह पत्रिका एक ऐसी सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करती है जो उनके सीखने को और पक्का करने में सहायक हो सके। उन जगहों पर यह सामग्री और अधिक उपयोगी है जहाँ साक्षरता की कक्षाएँ समाप्त होने के बाद अन्य पठन सामग्री पहुँचने में विलंब होता है। मेरा सुझाव है कि इस रूप में यह पत्रिका देश के तमाम लोक शिक्षाकेंद्रों पर पहुँचनी चाहिए, जिससे नवसाक्षरों को साहित्य के साथ-साथ सूचनात्मक सामग्री भी मिल सके। **रचना सिद्धा,** जयपुर, राजस्थान
- **सा. सं.** क्रमशः सुंदरतर होती जा रही है। अब यह संग्रहणीय बन गई है। अभिनंदन पूरी टीम का। **मार्च** अंक में देसी महिला दिवस मनाने का सुझाव स्वीकार योग्य है। मेरा सुझाव है, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च से शुरू होकर सावित्रीबाई फुले के परिनिर्वाण दिवस, 10 मार्च तक चले। **पं. मृत्युंजय शर्मा,** भिलाई, म.प्र.
- **सा. सं.** के अवलोकन से प्रकाशन के दो पक्ष स्पष्ट होते हैं–ट्रस्ट के प्रकाशनों से परिचय तथा उत्तर-साक्षरताकर्मियों के लिए सहज-सरल सामग्री की प्रस्तुति। **सा. सं.** दोनों ही पक्षों के साथ न्याय कर रहा है। कविताएँ तो इतनी प्रेरक, किंतु सहज ग्राह्य होती हैं कि वह बड़ी-बड़ी बातें भी बहुत सहज तरीके से कह जाती हैं। इन कविताओं का विषयवार संकलन के रूप में प्रकाशन उपयोगी होगा। **युगेश शर्मा,** भोपाल, म.प्र
- **सा. सं.** का उद्घोष अनंत जन समुदाय तक पहुँच रहा है। संत कबीर ने ऐसा ही अलख जगाया था जिनकी वाणी समूचे संसार में गूँज रही है। महिला दिवस के अवसर पर आपने अनेक कविताएँ छापीं और बेटियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। स्वतंत्रता के बाद संभवतः पहली बार इस तरह की कोई बुलेटिन छापी जा रही है, जो लोगों के भीतर जागरण पैदा कर रही है। **दानबहादुर सिंह,** रीवा, म.प्र.
- **साक्षरता संवाद** एक प्यारी-सी धरोहर लगने लगी है। कृपया लेखकों के पूरे पते दें। **बद्री प्रसाद वर्मा अनजान,** गोरखपुर, उ.प्र.
- **सा. सं.** गागर में सागर भरने के सुंदर प्रयास का प्रतिफल नजर आता है। **डॉ. नलिनी श्रीवास्तव,** भिलाई, म.प्र.

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। **–संपा.**

शिक्षा की ज्योति

डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, *बरेली, उ.प्र.*

शिक्षा की चहुँ ज्योति जलाएँ
गाँव-गाँव जागृति फैलाएँ।
अंधकार को दूर भगाती
गहन नींद से रही जगाती
मेट निराशा के बादल को
विश्वासों की फसल उगाती
साक्षरता अभियान चलाकर
अवनति की मिल नींद हिलाएँ।
अनपढ़ हैं जो लोग उन्हें ही
दुनिया है ये ठगती रहती
धूल झोंककर दयावती-सा
उनके आगे खुद को कहती
बुद्धिमान यदि बनना है तो
ज्ञान-सुधा को पिएँ-पिलाएँ।

अक्षर से सबका नाता

नवल जायसवाल, *भोपाल, म.प्र.*

आओ समता के गीत गा लें
सबको अपना मित्र बना लें।
अक्षर से सबका नाता
हर वाक्य की रीत बना लें।
हर वाक्य में होता ज्ञान
हर विषय को ध्येय बना लें।

अक्षर का गीत

शरद नारायण खरे, *मंडला, म.प्र.*

अक्षर से ही ज्ञान मिले
मानव को पहचान मिले।
अक्षर से जीवन सँवरे
इंसाँ को सम्मान मिले।
अक्षर राह दिखाता है
हमको गुण की खान मिले।
अक्षर से इंसाँ निखरे
पग-पग पर नव शान मिले।
अंधकार पल में भागे
उजलेपन का मान मिले।
अक्षर साधक जीवन का
प्रगति का वरदान मिले।
दुख भागे और कष्ट मिटे
अक्षर से उत्थान मिले।
अक्षर है सबसे बढ़कर
'शरद' के मत को मान मिले।

साक्षर हो देश हमारा

निर्मल आचार्य, *मथुरा, उ.प्र.*

जन-जन का एक ही नारा
साक्षर हो देश हमारा!
गाँव-गाँव और शहर-शहर में
जाकर अलख जगाएँ
अ, आ, इ, ई, A, B, C, D
जाकर उन्हें सिखाएँ।
पढ़ जाए परिवार सारा
साक्षर हो देश हमारा!
बच्चे-बूढ़े और नौजवान
अब अनपढ़ न रह पाएँ
बनता है कर्तव्य हमारा
आगे उन्हें बढ़ाएँ।
मुख से निकले शब्द अर्थ प्यारा
साक्षर हो देश हमारा!
समय चक्र अब बदल रहा है
समय आज पहचानो
हम भी आज पढ़ेंगे भैया
अपने मन में ठानो।
जीवन में हो उजियारा
साक्षर हो देश हमारा!
शिक्षा वह अनमोल ज्ञान है
बाँटे नहीं बँटेगा
जितना तुम बाँटोगे इसको
उतना ज्ञान बढ़ेगा।
सपना हो साकार तुम्हारा
साक्षर हो देश हमारा!
'निर्मल-बंधु' साथ सभी के
अपना फर्ज निभाते
भारत को साक्षर करने की
कसम सभी जन खाते।
जीवन हो सफल हमारा
साक्षर हो देश हमारा!

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/06/2012

पर्यावरण बोध कथा

अपराध बोध

एक दिन स्वामी अवधनारायण वन से गुजर रहे थे। चारों ओर वृक्षों की हरियाली देखकर वे प्रसन्न हुए। सहसा उनका ध्यान 'खट्-खट्' की आवाज की ओर गया। उन्होंने एक लकड़हारे को देखा जो वृक्ष पर चढ़ा हरी डाल काट रहा था। कुल्हाड़ी के प्रहार की आवाज आ रही थी। स्वामी जी ने उसे आवाज दी। नीचे बुलाया। लकड़हारा कुल्हाड़ी लेकर नीचे उतर आया। उसने उन्हें प्रणाम किया और पूछा, ''आज्ञा दीजिए स्वामी जी, आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?''

स्वामी जी बोले, ''बेटे, वृक्ष से एक पत्ता तोड़ लाओ।''

लकड़हारा एक पत्ता तोड़ लाया। स्वामी जी बोले, ''बेटा, अब ऐसा करो, इस पत्ते को वापस उस स्थान पर लगाकर आओ जहाँ से तोड़ा है।''

लकड़हारा उनका मुँह ताकने लगा। बोला, ''स्वामी जी, ऐसा नहीं हो सकता। पत्ता वापस उस जगह नहीं लगाया जा सकता।''

स्वामी जी बोले, ''बेटे, जब तुम एक पत्ता लगा नहीं सकते तो इस हरे वृक्ष की डाल क्यों काट रहे हो?''

लकड़हारा निरुत्तर था। उसे अपने अपराध का भान हो गया। उसने अपनी गलती के लिए स्वामी जी से क्षमा माँगी और उन्हें यह वचन दिया कि वह भविष्य में हरे वृक्षों को कभी नहीं काटेगा।

पेड़
जब तक 'हरा' है
सभी का मन
'हरा' है।

अशोक 'आनन'
मक्सी, शाजापुर, म.प्र.

सब मिलकर यदि वृक्ष लगाएँ
और उन्हें नित ही सहलाएँ
तो यह धरती स्वच्छ बनेगी
वायु प्राणदा तभी बनेगी।

रूपनारायण काबरा
जयपुर, राजस्थान

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070